

# ॥ रावण रचित शिव तांडव स्तोत्र ॥

जटा टवी गलज्जलप्रवाह पावितस्थले गलेऽव लम्ब्यलम्बितां भुजंगतुंग मालिकाम् ।  
डमडुमडुमडुमन्निनाद वडुमर्वयं चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १॥

जटाकटा हसंभ्रम भ्रमन्निलिंपनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि ।  
धगद्गद्गद्गज्ज्वल ललाटपट्टपावके किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं ममः ॥ २॥

धराधरेंद्रनंदिनी विलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगंतसंतति प्रमोद मानमानसे ।  
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्विगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३॥

जटाभुजंगपिंगल स्फुरत्फणामणिप्रभा कदंबकुंकुमद्रव प्रलिप्तदिग्व धूमुखे ।  
मदांधसिंधु रस्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदद्भुतं बिभर्तुभूत भर्तरि ॥ ४॥

सहस्रलोचन प्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणी विधूसरां घ्रिपीठभूः ।  
भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियैचिरायजायतां चकोरबंधुशेखरः ॥ ५॥

ललाटचत्वरज्ज्वल द्धनंजयस्फुलिंगभा निपीतपंच सायकंनम त्रिलिंपनायकम् ।  
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसंपदे शिरोजटालमस्तुनः ॥ ६॥

करालभालपट्टिका धगद्गद्गद्गज्ज्वल द्धनंजया धरीकृतप्रचंड पंचसायके ।  
धराधरेंद्रनंदिनी कुचाग्रचित्रपत्र कप्रकल्पनैकशिल्पिनी लिलोचनेरतिर्मम ॥ ७॥

नवीनमेघमंडली निरुद्धदुर्धरस्फुर त्कुहुनिशीथनीतमः प्रबद्धबद्धकन्धरः ।  
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः कलानिधानबंधुरः श्रियं जगद्गुरंधरः ॥ ८॥

प्रफुल्लनीलपंकज प्रपंचकालिमप्रभा विडंबि कंठकंध रारुचि प्रबंधकंधरम् ।  
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥ ९॥

अखर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी रसप्रवाह माधुरी विजृभणा मधुव्रतम् ।  
स्मरांतकं पुरातकं भावंतकं मखांतकं गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ॥ १०॥

जयत्वदभ्रविभ्रम भ्रमद्भुजंगमस्फुरद्भु गद्गद्गद्निर्गमत्कराल भाल हव्यवाट् ।  
धिमिद्धिमिद्धि मिध्वनन्मृदंग तुगमंगलध्वनिक्रमप्रवर्तितः प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥ ११॥

दृषद्विचित्रतल्पयो भुजंगमौक्तिकमस्र जोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।  
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ १२॥



# ॥ रावण रचित शिव तांडव स्तोत्र ॥

दृषद्विचित्रतल्पयो भुजंगमौक्तिकमस्र जोगरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।  
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ १२॥

कदा निलिंपनिर्झरी निकुंजकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन् ।  
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३॥

निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः ।  
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहनिशं परिश्रय परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥ १४॥

प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना ।  
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः शिवेति मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥ १५॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।  
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥ १६॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।  
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥ १७॥

॥ इति श्रीरावण कृतम् शिव ताण्डव स्तोत्रम्सम्पूर्णम् ॥

For more Authentic PDFs visit:

Shiv Tanda Stotra in Sanskrit, Hindi and English

Click here! : [Shiv Tandav Stotram](#)

